आत्मा

मे हु चेतन्य ज्योति स्वरूप आत्मा!!!
देह नही मे ;;;हु उसकी मे मालिक!!!
भृकुटि हे तख्त मेरा;;;कर्मद्रियो पर हे राज मेरा!!!
सात गुणो की रचना हे मेरी ,,इन्द् धनुष मे जेसे 7 रंग!!!
ग्यान पविञता सुख प्रेम शांति आनन्द शक्ति की थी मे मालिक!!!
सत्तोप्रधान थी दो कल्प "सतयुग ञेता" थी सम्पन्न सम्पूर्ण!!!
आया वक्त खोया स्वराज्य हुई गुलाम देह-भान की हुई जो बिमारी!!!
सत्तो से रजो फिर तमो मे जो गिरती आई!!!
सुख शांति अपनी सब गँवाई;;हो ग ई वो बिखारी!!!
एक दूजे को देने लगी दोष;; खोयी जो अपनी अज़ादी!!!
हुई परेशान माया जाल मे फंसी जो वो बेचारी!!!
मृग तृष्णा ने ऐसा जकड़ा मर गयी बुद्धि थी जो प्यारी!!!
विग्यान ने अपना राज्य ज़माया स्वयं को भगवान् बताया!!!

थक गया सृष्टि का पर भेद न पाया;; हार कर पुकारा प्रभु को!!!
प्रुभु आया सुन कर फरियाद बुद्धि का बंद ताला खुद उसने जब खोला!!!
देकर स्मृति आत्मा की;; ओर परमपिता परमात्मा का सम्बंध बताया!!!
आत्मा फिर स्वधर्म मे आई;; खोयी सत्ता फिर से उसने पाई !!!
राजयोग की विध्या प्रभु ने ब्रह्मा तन से सिखाई!!!
आत्मा ने सुख शांति की करी अनमोल कमाई !!!
संगम है आता कराने स्वर्ग मे जाने का प्रालब्ध बनाने!!
कर लो सब तुम ऐसी भविष्य की कमाई ;;
जायेगी यह ही संग आत्मा के मेरे प्यारे भाई!!!